प्रेस नोट :-

पूसा संस्थान द्वारा आयोजित धान की पराली प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला

भा. कृ. अनु. प. - भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली एवं नर्चर फार्म तथा यू. पी. एल. लिमिटेड द्वारा संयुक्त रूप से धान की पराली प्रबंधन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है। कार्यक्म के मुख्य अतिथि माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी थे और विशिष्ट अतिथि श्री मनोज आहूजा सचिव, सचिव, कृषि एवं कृषि किसान कल्याण विभाग रहे। डॉ. एस के चौधरी उप महानिदेशक (एन आर एम) भा. कृ. अनु. प., नई दिल्ली, श्री विक्रम श्रॉफ, यूनाइटेड फॉस्फोरस लि। ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम के अवसर पर डॉ. ए. के. सिंह, निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान ने मंच पर आसीन सभी मुख्य अतिथियों का स्वागत किया। निदेशक महोदय ने अपने स्वागत भाषण में पराली जलाने की जगह पराली गलाने से होने वाले फायदों पर प्रकाश डाला और एक शार्ट फिल्म किसानो को दिखाई गयी। श्री विक्रम श्रॉफ जी ने कंपनी द्वारा किसानों के खेत पर किये गए सफल प्रयोगो के बारे में जानकारी दी। कार्यशाला में कई किसानो जैसे की श्री गुरमीत सिंह जी, श्री सत्यवान शेरावत जी, श्री रघुवीर सिंह जी ने पूसा डीकम्पोज़र के उपयोग में लाने से जुड़े बहुत से अच्छे अनुभवों को सांझा किया है सभी किसान ने बताया की पूसा देकपोसेर के उपयोग से मिटटी की उर्वरता में वृद्धि हुई साथ ही साथ पैदवार भी बढ़ती है।

माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर जी ने अपने विचार रखते हुए कहा की लगभग हर साल हम परली जलाने से होने वाले वायु प्रदूषण की समस्या का सामना हर वर्ष करते है। आज भी लगभग 50 प्रतिशत रकबे में परली जलायी जाती है जो की प्रदूषण के साथ साथ मिट्टी की उर्वरता को भी ख़राब करता है।धान की कटाई और दीपावली के समय यह समस्या सबसे ज्यादा देखने को मिलती है। इसका मुख्य कारण पंजाब और हरियाणा में किसानों के द्वारा जलाई जाने वाली पराली होती हैं। हमारे देश के वैज्ञानिक कृषि को किसानो के बेहतर बनाने के लिए हमेशा ही प्रयासरत रहते है और इन सभी में भारतीय कृषि अनुसधान परिषद् का महत्वपूर्ण योगदान है। भारतीय कृषि उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में , फसल तो कीटो और रोगो से बचाने, मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में वैज्ञानिको का महत्वपूर्ण योगदान है। पूसा संस्थान द्वारा पराली प्रबंधन समस्या के समाधान के लिए पूसा डीकंपोजर नाम का एक माइक्रोबियल कंसोर्टियम विकसित किया गया है। इसका घोल फसलों के अवशेषों या पराली को गलाकर खाद बना देता है। इस माइक्रोबियल कंसोर्टियम के प्रयोग से धान की पराली को जल्दी सड़ने लगती है और खाद बन जाती है। यह हमारे अनुसधान संस्थानों दूरदर्शिता बताता है। केंद्र सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए लगभग 3000 करोड़ की राशि प्रबंधन की योजनाओ पर खर्च की है। मंत्री महोदय ने कहा इस सरकार, किसानों , वैज्ञांनिको और कम्पनियो को सामूहिक प्रयास कर पूसा डीकम्पोज़र के उपयोग को अधिक से अधिक बढ़ाना है और पराली जलाने की बजाय परली गलने के इस मिशन को 100% सफल बनाना है।

श्री मनोज आहूजा जी पराली प्रबंधन हम सभी के सामने एक बड़ी चुनौती है। इसके लिए गेंहू और चावल की काम अवधी वाली नयी किस्मे निकली गयी है। धान की डायरेक्ट सीडिंग से भी धान की अवधी में कमी आती है। खेत में ही प्रबंधन के लिए सरकार द्वारा हैप्पी सीडर और स्मार्ट सीडर जैसी कई मशीने दी गयी है जिनकी

सहायता से हम धान की पराली को जलाये बिना हम गेंहू की बुआई कर सकते है और मल्चिंग कर सकते है। पूसा संसथान द्वारा विकसित पूसा डीकम्पोज़र का उपयोग भी पराली प्रबंधन में किया जा सकता है। पिछले वर्ष ने चार लाख हैक्टर में इसका सफल प्रयोग किया था। पराली से इथेनॉल बनाना, पराली से गैस बनाना, पराली से बिजली बनाना ऐसे कई पराली प्रबंधन तकनीकी है जिनके द्वारा हम पराली की समस्या का समाधान करने के लिए प्रयासरत है।

कार्यक्रम के अंत में सागर कौशिक, नर्चर फार्म एवं यूनाइटेड फॉस्फोरस लि० मंत्री महोदय, पूसा संस्थान, किसान भाइयों, कंपनी प्रतिनिधियों को धन्यवाद दिया।